"मिल-जुलकर बनाते हैं बेहतर विद्यालय" : ममता जैन

मोहम्मद तसलीम

चित्र 1 : सुबह की सभा में खेल भी शामिल हैं

मध्य प्रदेश के खरगोन ज़िले में एक विद्यालय है ईजीएस बेड़ीपुरा। यहाँ की प्रधानाध्यापिका ममता जैन ने विद्यालय में आने वाले हर विद्यार्थी के साथ, उनके अभिभावकों के साथ एक सुन्दर रिश्ता क़ायम किया है जिसके चलते वो विद्यालय को बेहतर बना पाई हैं। विद्यालय में 125 विद्यार्थी हैं, और लगभग सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित रहती है। 2006 से वे इस विद्यालय में हैं। बहुत सारे उतार-चढ़ाव से गुज़रते हुए साथी शिक्षकों का, समुदाय का भरोसा हासिल करते हुए विद्यार्थियों के आनन्द और सीखने को सुनिश्चित करना उनका मुख्य उद्देश्य है। विद्यालय को बेहतर बनाने में किस तरह की योजनाएँ काम आती हैं; कैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा; विद्यार्थियों का सीखने का स्तर कैसा है; आदि सवालों पर ममता जैन से बात की अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी तसलीम ने। प्रस्तुत हैं बातचीत के कुछ अंश :

ममता जैन

तसलीम : आप शिक्षण की प्रक्रिया में विद्यालय के वातावरण को अहम मानती हैं। इसे बेहतर बनाने के लिए अपने विद्यालय में क्या प्रयास किए हैं?

ममता : सकारात्मक, प्रेरक और सहयोगी वातावरण विद्यार्थियों को सीखने के लिए उत्साहित करता है। विद्यालय का माहौल तभी आबाद होता है जब उसे सँवारने में शिक्षकों के प्रयास, विद्यार्थियों की सक्रियता और समुदाय की भागीदारी हो।

विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में हमारे प्रयास सिर्फ़ किताबों तक सीमित नहीं हैं। हम टीएलएम, खेल, पुस्तकालय और दूसरे अनुभव-आधारित तरीक़ों से विद्यार्थियों को सीखने से जोड़ते हैं। रोज़ाना 40-45 मिनट की मॉर्निंग असेम्बली में कहानी, कविता, पहेलियाँ, सामान्य ज्ञान, योग अभ्यास और शारीरिक क्रियाएँ करवाई जाती हैं जो विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती हैं। महत्त्वपूर्ण दिनों व स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक मौक़ों पर विद्यार्थियों से सम्बन्धित विषयों पर बात रखना व लेखन करवाया जाता है जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ता है।

तसलीम : क्या आप इसके लिए विद्यार्थियों के अभिभावकों से भी बात करती हैं, उन्हें भी इस प्रक्रिया में शामिल करती हैं?

ममता : हाँ, अभिभावकों के साथ नियमित संवाद को अपने काम का ज़रूरी हिस्सा मानती हूँ। मेरी कोशिश होती है कि हर अभिभावक विद्यार्थी की शिक्षा में भागीदार बने। जब वे विद्यालय आते हैं तब उनसे विद्यार्थियों की प्रगति, व्यवहार और रुचियों पर चर्चा करती हूँ। इससे विद्यार्थियों की ज़रूरतों को समझने में मदद मिलती है, और पढ़ाने की दिशा भी साफ़ होती है।

यह भी देखती हूँ कि जब अभिभावकों को अनुभव होता है कि विद्यालय उनके बच्चे के हर तरह के विकास के लिए गम्भीर है, वे मदद करने ख़ुद ही आगे आते हैं। वे विद्यालय की गतिविधियों, स्वच्छता अभियान, बाल सभा या उत्सवों के आयोजन में उत्साह से भाग लेते हैं। इससे विद्यालय और समुदाय के बीच भरोसे एवं सहभागिता का एक मज़बूत पुल बनता है।

तसलीम : आपने वातावरण निर्माण में मॉर्निंग असेम्बली का ज़िक्र किया है। इसके उद्देश्य और विद्यालय की गतिविधियों के बारे में थोड़ा विस्तार से बताइए।

ममता : मॉर्निंग असेम्बली वह समय है जहाँ सीखना और आनन्द साथ-साथ चलते हैं। जहाँ बड़े समूह में विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के मौक़े मिलते हैं। असेम्बली की गतिविधियों से विद्यार्थियों की उपस्थिति और सीखने के प्रति रुचि में उल्लेखनीय बदलाव आया है। अब विद्यार्थी विद्यालय जल्दी पहुँचने की कोशिश करते हैं, उन्हें जिज्ञासा रहती है कि आज सभा में क्या नया होगा! हालाँकि हर बार कुछ नया करवाना चुनौतीपूर्ण होता है।

सभा की शुरुआत पाठ्यपुस्तकों की कविताओं और कहानियों से करते हैं। विद्यार्थी ख़ुद से लिखी या कही-सुनी कविता, कहानियाँ, पहेलियाँ भी सुनाते हैं। फिर हिन्दी, अँग्रेज़ी और संस्कृत में वस्तुओं के नाम, महीनों के नाम, पर्यायवाची शब्द, संख्याओं और पहेलियों, आदि पर रोचक गतिविधियाँ कराते हैं। जो विद्यार्थी कक्षा में अपनी बात रखने में कभी-कभी संकोच या असमर्थता महसूस करते हैं, वे यहाँ सहज रूप से बोलने-बतियाने में आत्मविश्वासी बनते हैं। प्रयास रहता है कि सभी विद्यार्थी किसी-न-किसी गतिविधि में ज़रूर प्रतिभाग करें।

तसलीम : प्रिंट-रिच वातावरण का अर्थ अकसर कक्षा की दीवारों का पठन सामग्री से सजा-सँवरा हुआ होना मान लिया जाता है। लेकिन आपके विद्यालय में बात थोड़ी आगे जाती हुई दिखती है। ज़रा बताइए कि किस तरह प्रिंट-रिच वातावरण विद्यार्थियों के सीखने में मददगार हो रहा है?

ममता : आपने ठीक सवाल किया। शुरू के दिनों में मुझे भी लगता था कि प्रिंट-रिच वातावरण का अर्थ है पठन सामग्री से सजी दीवारें। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि सुन्दर सज्जा से ज़्यादा ज़रूरी है उपयोगिता। ऐसी सामग्री जो विद्यार्थियों की पहुँच में हो, उस पर वे बात कर सकें, अपने खेलों का हिस्सा बना सकें, शिक्षक पाठ पढ़ाते हुए उस सामग्री का उपयोग कर सकें और नई सामग्री का निर्माण कर सकें। प्रिंट-रिच वातावरण को बनाने में विद्यार्थियों को शामिल करना काफ़ी फ़ायदेमन्द रहा। हमारी कक्षाओं में अधिकांश सामग्री विद्यार्थियों के द्वारा बनाई हुई ही होती है। शब्द-जाल, चित्र पोस्टर, कविता-पंक्तियाँ, गणितीय सूत्र, पहेलियाँ, आदि जैसी कुछ सामग्री शिक्षक भी बनाते हैं। इनमें समय-समय पर अधिगम प्रतिफल की ज़रूरत के हिसाब से बदलाव भी किया जाता है। जब विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की किसी कविता-कहानी को दीवार पर पढ़ते हैं तब उन्हें अलग तरह की ख़ुशी मिलती है। वे उसे जल्दी याद कर लेते हैं, और ज़ोर-ज़ोर से एक दूसरे को गाते-सुनाते एवं अभिनय करते हैं।

तसलीम : विद्यालय में रीडिंग कॉर्नर भाषा-समृद्ध वातावरण का ज़रूरी हिस्सा है। आपके विद्यालय में इनका इस्तेमाल किस तरह होता है?

ममता : विद्यालय में सभी कक्षाओं के भाषा स्तर के अनुरूप कविता, कहानी एवं अन्य विधाओं की किताबें रीडिंग कॉर्नर में हैं। इनका इस्तेमाल विद्यार्थियों की स्वेच्छा से पढ़ने की आदत बनाने के लिए किया जाता है। यहाँ लंच के बाद या ख़ाली समय में विद्यार्थी अपनी इच्छा से पुस्तकें पढ़ते हैं, और आपस में उन पर चर्चा करते हैं। जिन विद्यार्थियों में अभी पठन कौशल विकसित हो रहा है, वे चित्रों को देखकर कथानक की रचना करते हैं। इससे उनकी कल्पनाशक्ति और मौखिक अभिव्यक्ति मज़बूत होती है। जैसे, कक्षा दो की छात्रा रूबिया किताबों में छपे चित्रों के अनुभव और कल्पनाओं के आधार पर दिलचस्प कहानियाँ सुनाती है।

इसके अलावा पठन को विद्यार्थियों के जीवन से जोड़ने के लिए एक नई पहल शुरू की गई। विद्यार्थियों को उनके जन्मदिन पर उपहार में किताबें दी जाती हैं। मक़सद है, विद्यार्थी पुस्तकें पढ़ें, उनसे जुड़ें, उन्हें अन्य साथियों से साझा करें। इस पहल से व्यक्तिगत व स्वतंत्र पढ़ने का माहौल बन रहा है।

तसलीम : ममताजी, आप प्रधान पाठक (प्रधान अध्यापिका) हैं, और कक्षा की ज़िम्मेदारी भी है। इन सबमें कैसे तालमेल बनाती हैं?

ममता : दोनों भूमिकाओं के बीच सन्तुलन बनाना चुनौतीपूर्ण तो है, लेकिन व्यवस्थित योजना और सभी के सहयोग से इसे ठीक से निभाने का प्रयास करती हूँ। शैक्षणिक कार्य को ज़्यादा तवज्जो देती हूँ, और जो विभागीय काम बहुत ज़रूरी नहीं हैं उन्हें विद्यालय समय से पहले, दोपहर के अवकाश या छुट्टी के बाद करने की कोशिश करती हूँ।

साथ ही, स्टाफ़ की मदद से मिल-जुलकर काम करने की योजना बनाई है। जब मुझे किसी विशेष कार्य के लिए कक्षा से जाना पड़ता है तब सहयोगी शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बातचीत-आधारित गतिविधियाँ, पठन-पाठन से जुड़ी कहानियाँ या कविताएँ साझा करते हैं। इससे विद्यार्थियों के समय का रचनात्मक उपयोग होता है, और पढ़ने-लिखने का माहौल भी बना रहता है।

मेरा हर सम्भव प्रयास रहता है कि विद्यालय में सहयोगी एवं लचीले वातावरण से विद्यार्थियों के सीखने की निरन्तरता बनी रहे।

तसलीम : शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए क्या प्रयास करती हैं?

ममता : मेरा मानना है सतत् पेशेवर विकास शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाता है। यह विद्यालय में पढ़ने-पढ़ाने की संस्कृति को भी मज़बूत बनाता है। इस मक़सद को पूरा करने के लिए हमें 'अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन' का लगातार सहयोग मिलता है। समय-समय पर होने वाले विषय-आधारित प्रशिक्षण, टीएलएम निर्माण कार्यशालाएँ व बाल-केन्द्रित पढ़ाने के तरीक़ों पर आधारित सत्रों में हम बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। कार्यशालाओं में बनने वाली समझ को अपने स्तर तक सीमित न रखते हुए विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के साथ साझा करते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे एक सामूहिक चिन्तनशील अभ्यास का वातावरण बन रहा है।

मसलन, अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण में सुधार हेतु स्टाफ़ के सहयोग से आइसक्रीम स्टिक और अन्य स्थानीय सामग्रियों से शब्द स्मरण (word recall) के लिए शिक्षण सामग्री बनाई। इस प्रकार के नए प्रयास शिक्षकों की सोच व रचनात्मकता को बढ़ाते हैं।

विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए टीएलएम निर्माण भी करते हैं। यह सारी प्रक्रिया हमें ख़ुद से प्रेरित शिक्षार्थी (self-motivated learners) के रूप में विकसित करती है, और एक सहयोगी, नवाचारी एवं संवेदनशील शिक्षक समुदाय बनने की नींव रखती है।

तसलीम : पलायन इस क्षेत्र की बड़ी समस्या है। पलायन-प्रभावित विद्यार्थियों के साथ आप कैसे काम करते हैं?

ममता : हमारे क्षेत्र में मौसमी पलायन, शोषण से उपजी एक गहरी सामाजिक-आर्थिक समस्या है जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ता है। हम पलायन-प्रभावित परिवारों की पहचान करते हैं, विद्यार्थियों के अभिभावकों से बात करते रहते हैं, उन्हें विद्यालय की गतिविधियों के बारे में बताते हैं, और विद्यार्थियों के लिए पढ़ना क्यों ज़रूरी है इस बारे में बातचीत करते हैं। साथ ही, उन्हें विद्यार्थियों के शैक्षिक दस्तावेज़ साथ ले जाने का सुझाव देते हैं ताकि वह पलायन में जहाँ भी जाएँ, वहाँ उनके विद्यार्थियों का नामांकन हो सके।

यदि विद्यार्थी सत्र के बीच में चले जाते हैं, हमारी कोशिश रहती है कि उनका विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव बना रहे। इसलिए हम कभी-कभी फ़ोन या मैसेज के द्वारा उनसे या उनके अभिभावकों से सम्पर्क करते हैं। जब ये विद्यार्थी वापस लौटते हैं तब तुरन्त उनके अभिभावकों से मिलकर उनका नामांकन अपने विद्यालय में करते हैं, और उनकी छूटी हुई पढ़ाई को पूरा करने की कोशिश करते हैं।

तसलीम : आज आपका विद्यालय काफ़ी बेहतर है। विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से लेकर विद्यालय के रखरखाव के नज़रिए तक। यहाँ तक पहुँचने में किस तरह की चुनौतियाँ आईं?

ममता : चुनौतियाँ तो बहुत थीं। ऐसा नहीं है कि अब सारी चुनौतियाँ ख़त्म हो गई हैं। लेकिन काफ़ी हद तक हम कुछ काम कर सके हैं। शुरुआत में समुदाय का भरोसा जीतना बड़ी चुनौती थी। विद्यालय की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। चहारदीवारी नहीं थी, दीवारों का रंग-रोगन, विद्यार्थियों के लिए अन्य व्यवस्थाएँ, आदि नहीं थीं। गाँव के कुछ नासमझ लोग विद्यालय में आकर तोड़-फोड़ करते थे, शौचालय गन्दे करते, पेड़-पौधे नष्ट कर देते थे। अच्छा यह हुआ कि हम सभी शिक्षक माया पटेल, माया रवीन्द्र और दिलीप पटेल यहीं विद्यालय के आस-पास रहते हैं। इससे हमें समुदाय से रिश्ता बनाने और उनका भरोसा हासिल करने में मदद मिली। जो लोग पहले विद्यालय को नुक़सान पहुँचाते थे, आज वो हमारा साथ देते हैं। मेरा मानना है कि अगर हम अच्छे मन और गहरे सामाजिक सरोकार से कोई काम करना चाहते हैं तो रास्ते निकल ही आते हैं।

मोहम्मद तसलीम विगत 10 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन खरगोन, मध्य प्रदेश में कार्यरत हैं। वे फ़ैलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। इससे पहले उन्होंने मीडिया एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य किया है। प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के साथ पर्यावरण विषय पर कार्य करने के साथ अन्य विषयों को सीखने एवं समझने का प्रयास कर रहे हैं।

सम्पर्क : mohd.shaikh@azimpremjifoundation.org